कथा सरिता

निष्ठापूर्वक कर्म

कौशिक नामक एक ब्राह्मण बड़ा तपस्वी था। तप के प्रभाव से उसमें बहुत आत्म बल आ गया था। एक दिन वह वृक्ष के नीचे बैठा हुआ था कि ऊपर बैठी हुई चिड़िया ने उस पर बीट कर दी। कौशिक को क्रोध आ गया। लाल नेत्र करके ऊपर को देखा तो तेज के प्रभाव से चिड़िया जल कर नीचे गिर पड़ी। ब्राह्मण को अपने बल पर गर्व हो गया।

दूसरे दिन वह एक सद्गृहस्थ के यहाँ भिक्षा मांगने गया। गृहस्वामिनी पति को भोजन परोसने में लगी थी। उसने कहा, "भगवन, थोड़ी देर ठहरो अभी आपको भिक्षा दूंगी।" इस पर ब्राह्मण को क्रोध आया कि मुझ जैसे तपस्वी की उपेक्षा करके यह पति सेवा को अधिक महत्व दे रही है।

गृहस्वामिनी ने दिव्य दृष्टि से सब बात जान ली। उसने ब्राह्मण से कहा, "क्रोध न कीजिए, मैं चिड़िया नहीं हूँ। अपना नियत कर्त्तव्य पूरा करने पर आपकी सेवा करूंगी।" ब्राह्मण क्रोध करना तो भूल गया, उसे यह आश्चर्य हुआ कि चिड़िया वाली बात इसे कैसे मालूम हुई! ब्राह्मणी ने इसे पति सेवा का फल बताया और कहा कि इस सम्बंध में अधिक जानना हो तो मिथिलापुरी में तुलाधार वैश्य के पास जाइए। वे आपको अधिक बता सकेंगे।

भिक्षा लेकर कौशिक चल दिया और मिथिलापुरी में तुलाधार के घर जा पहुँचा। वह तौल नाप के व्यापार में लगा हुआ था। उसने ब्राह्मण को देखते ही प्रणाम अभिवादन किया और कहा, "तपोधन कौशिक देव, आपको उस सद्गृहस्थ गृहस्वामिनी ने भेजा है सो ठीक है। अपना नियत कर्म कर लूँ तब आपकी सेवा करूंगा। कृपया थोड़ी देर बैठिये। ब्राह्मण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरे बिना बताये ही इसने मेरा नाम तथा आने का उद्देश्य कैसे जाना! थोड़ी देर में जब वैश्य अपने कार्य से निवृत्त हुआ तो उसने बताया कि मैं ईमानदारी के साथ उचित मुनाफा लेकर अच्छी चीज़ें लोक हित की दृष्टि से बेचता हूँ। इस नियत कर्म को करने से ही मुझे यह दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई है। अधिक जानना हो तो मगध के निजाता चाण्डाल के पास जाइये। कौशिक मगध चल दिये और चाण्डाल के यहाँ पहुँचे। वह नगर की गंदगी झाड़ने में लगा हुआ था। ब्राह्मण को देखकर उसने साष्टांग प्रणाम किया और कहा, "भगवन, आप चिड़िया मारने जितना तप करके उस सद्गृहस्थ देवी और तुलाधार वैश्य के यहाँ होते हुए यहाँ पधारे यह मेरा सौभाग्य है। मैं नियत कर्म कर लूँ, तब आपसे बात करूंगा। तब तक आप विश्राम कीजिए।"

चाण्डाल जब सेवा वृत्ति से निवृत्त हुआ तो उन्हें संग ले गया और अपने वृद्ध माता पिता को दिखाकर कहा, "अब मुझे इनकी सेवा करनी है। मैं नियत कर्त्तव्य कर्मों में निरन्तर लगा रहता हूँ, इसी से मुझे दिव्य दृष्टि प्राप्त है।"

तब कौशिक की समझ में आया कि केवल तप साधना से ही नहीं, नियत कर्त्तव्य, कर्म निष्ठापूर्वक करते रहने से भी 'आध्यात्मिक का लक्ष्य' पूरा हो सकता है और सिद्धियाँ मिल सकती हैं।

असफलता क्यों

एक बार की बात है, दो दोस्त थे राम और मोहन। राम अपने जीवन के कठिन समय से गुज़र रहा था। उसे जीवन में बार-बार असफलता मिल रही थी। लेकिन मोहन एक हाई अचीवर्स था। मोहन की खास बात यह थी कि वह जो भी काम करता था। उसमें सफल ज़रूर होता था। एक दिन राम मोहन से मिलने आया और उससे उसकी सफलता का राज़ पूछा। यह सुनकर मोहन मुस्कुराने लगा और बोला कि असफल व्यक्तियों की असफलता से ही मैंने सफल होना सीखा है। यह सुनकर राम सोच में पड़ गया और बोला कि यह कैसे संभव है! किसी असफल व्यक्ति की असफलताओं से सीखकर तुम सफल कैसे बन सकते हो! मोहन ने कहा - मैं तुम्हें यह राज़ बता दूंगा लेकिन पहले मुझे बताओ कि तुम असफल कैसे हुए। राम ने कहा, मेरे पास बहुत पैसा था और मैं एक अमीर व्यक्ति का जीवन जी रहा था। मैं और भी अधिक पैसा कमाना चाहता था। इसलिए मैंने एक कम्पन खोली। मैं जल्दी सफल होना चाहता था। इसलिए उसी साल मैंने दूसरी कम्पनी भी खोल दी। मेरा सारा पैसा इन दोनों कम्पनी में लग गया। मैंने जल्दबाज़ी में दो कम्पनी खोल तो ली, लेकिन मैं अपनी किसी भी कंपनी को पूरा समय नहीं दे पा रहा था। जिसके कारण कुछ ही समय बाद दोनों कम्पनी घाटे में चली गयी। मैं दोनों कम्पनी से होने वाले लॉस को प्रॉफिट में बदल सकता था, लेकिन मेरे पास उस लॉस को पूरा करने के लिए पैसे ही नहीं बचे थे। धीरे-धीरे कम्पनी का घाटा बढ़ता चला गया और दूसरे ही साल मेरी दोनों कम्पनी बंद हो गयी।

यह सब सुनकर मोहन ने राम से कहा, तुम्हारी असफलता के दो कारण थे। एक तो तुमने दो कम्पनी एक ही साल में खोल ली। जिसके कारण तुम किसी भी कम्पनी को पूरा समय नहीं दे पाये। दूसरा - तुमने अपना सारा का सारा पैसा इन दोनों कम्पनी में लगा दिया और जब तुम्हें घाटा हुआ, तो उससे उभरने के लिए तुम्हारे पास एक भी पैसा नहीं बचा। जिसके कारण तुम आज एक असफल व्यक्ति हो। मैं इसी प्रकार असफल व्यक्ति के द्वारा की गयी गलतियों से सीख लेकर सफल होता रहा हूँ। हमारी ज़िंदगी इतनी बड़ी नहीं है कि हम अपने द्वारा की गयी गलतियों से सीख लेकर उन्हें सुधारें। अगर आप अपने हर काम में सफल होना चाहते हो तो अपने द्वारा की गयी गलतियों के साथ-साथ दूसरों के द्वारा की गयी गलतियों से भी सीख लें और आगे बढ़ते रहें।

मदद का इंतज़ार

एक बार की बात है। एक बहुत ही अमीर इंसान अपने ऑफिस से अपनी महंगी गाड़ी को चलाते हुए थोड़ा आगे बढ़ा ही था कि उसने देखा कि गाड़ियों के बीच में एक बच्चा दौड़ता हुआ निकल रहा है। उस बच्चे को वह देख ही रहा था कि एक ईंट आके ज़ोर से उसकी गाड़ी पर पड़ती है। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ये छोटा सा बच्चा मेरी गाड़ी पर ईंट क्यों फेंक रहा है! वह गाड़ी को रोक के और उतरकर तुरंत उस बच्चे की ओर भागता है, वह बच्चा यह देखकर गाड़ियों के पीछे छुप जाता है। उस आदमी ने उस बच्चे को बाहर निकाला और पूछा कि तुम मेरी गाड़ी पर पत्थर क्यों मार रहे हो? उस बच्चे ने बड़ी विनम्रता से कहा कि आपको मुझ पर बहुत गुस्सा आ रहा है, आप मुझे पीटना चाहते हैं, मारना चाहते हैं, लेकिन मैं क्या करूँ, कोई गाड़ी रोक ही नहीं रहा है तो मुझे ईंट फेंक कर मारना पड़ा। मैं इतनी देर से हेल्प-हेल्प चिल्ला रहा हूँ, कोई मेरी आवाज़ नहीं सुन रहा है। कोई मेरी तरफ ध्यान ही नहीं दे रहा है। उस व्यक्ति ने पूछा कि बोलो बात क्या है? तो उस छोटे से बच्चे ने कहा कि मैं अपने भाई के साथ आ रहा था तभी एक बाइक वाले ने उसे टक्कर मार दी, उसका खून बह रहा है। वो इतना भारी है कि मैं उसे खींचके सड़क पर भी नहीं ला पा रहा हूँ, जैसे-तैसे मैंने उसे सड़क के किनारे किया है। मैं लोगों को रोक रहा हूँ ताकि वो मेरी मदद करें, लेकिन वो लोग रुक नहीं रहे हैं। मेरी मदद कीजिये। कोई मेरी बात सुन ही नहीं रहा इसीलिए मुझे ईंट फेंक के मारना पड़ा। ये जो व्यक्ति था जिसको घर जाने के लिए देरी हो रही थी। वह उस बच्चे के भाई को देखने गया उसके साथ। उस बच्चे ने और उस व्यक्ति ने दोनों ने मदद की और उसको कार में बिठाया। खून के धब्बों से उसकी कार खराब हो गयी फिर भी वह उसे हॉस्पिटल ले गए। उस बच्चे के भाई को एमरजेंसी वॉर्ड में रखा गया। जब डॉक्टर ने बोला कि ये बच्चा खतरे से बाहर है तब जाके ये व्यक्ति अपने घर गए। इस बार स्पीड बहुत धीरे थी और समझ नहीं पा रहे थे कि हुआ क्या है उनके साथ। घर गए, गाड़ी लगायी और उस टूटे हुए शीशे पर नज़र गयी जिस पर पत्थर आके लगा था। पूरा शीशा जो है वो टूट चुका था लेकिन इन्होंने सोचा कि मैं इसे बनाऊंगा नहीं क्योंकि यह टूटा हुआ शीशा मुझे बार-बार ज़िन्दगी में बताता रहेगा कि ज़िन्दगी में इतने भी कठोर मत हो जाओ कि ज़िन्दगी को ईंट मार के याद दिलानी पड़े कि कोई आपकी मदद के लिए इन्तज़ार कर रहा है।

भुवनेश्वर-ओडिशा। भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा को माउण्ट आबू में होने वाले 'ग्लोबल सम्मिट कम एक्सपो' में आने का निमंत्रण देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय। साथ हैं ब्र.कु. क्षीरा,दिल्ली तथा ब्र.कु. नथमल।

महम-हरियाणा। शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में जज मेनका मुदगिल तथा उनके पति एडवोकेट डॉ. संदीप मुदगिल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी,रशिया तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. चेतना।

दिल्ली। इंद्रप्रस्थ एजुकेशनल रिसर्च एंड चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा क्रिम्स लॉट्स वेदा ऑडिटोरियम में आयोजित इंडियाज़ राइज़िंग स्टार अवॉर्ड्स समारोह में राजयोगिनी ब्र.कु. मोनिका,छोटा उदेपुर,गुज. को आदिवासी इलाकों में उनके विभिन्न उत्कृष्ट कार्यों हेतु 'इंडियाज़ राइज़िंग स्टार अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए नरसिंह पढ़ियार संचोर,राष्ट्रीय अध्यक्ष,आदिवासी भील महासभा, काजल यादव,प्रेसीडेंट,इंद्रप्रस्थ एजुकेशनल रिसर्च एंड चैरिटेबल ट्रस्ट तथा अन्य।

घाटमपुर-उ.प्र.। 83वीं शिवजयंती के अवसर पर रैली का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. बहनें।

प्रवेश प्रारंभ

सरोज लालजी महरोत्रा ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज में बी.एस.सी. नर्सिंग (4 वर्षीय) एवं ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग में जी.एन.एम. (3 वर्षीय) कोर्स में प्रवेश प्रारंभ हो चुका है

योग्यता (बी.एस.सी. नर्सिंग)

आयु 31 दिसम्बर 2018 तक : 17-28 वर्ष (महिलाओं के लिए)
17-25 वर्ष (पुरुषों के लिए)
फिज़िक्स, केमिस्ट्री एवं बायोलॉजी में
कम से कम 50 प्रतिशत अंक
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
मोबाइल : 7014986102, 8432345230, 9529047341
ई-मेल : slmgnc.raj@gmail.com

योग्यता (जी.एन.एम.)

आयु 31 दिसम्बर 2018 तक : 17-34 वर्ष (महिलाओं के लिए)
17-28 वर्ष (पुरुषों के लिए)
साइंस, आर्ट्स, कॉमर्स में
कम से कम 50 प्रतिशत अंक
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
मोबाइल : 9649475278, 7976121052
ई-मेल: ghsn.abu@gmail.com